

जीव दया

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

जीव दया का अर्थ है— प्राणियों पर दया दृष्टि रखना। किसी भी प्राणी की हत्या न करना। ब्रह्माण्ड चौरासी लाख योनियों का केन्द्र है। प्राणी यहां जन्म लेता है और कर्मों का भुगतान करने के लिए जीवन—यापन करता है। चौरासी लाख जीव योनियों में केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सबसे अधिक विकसित है। अन्य प्राणी न चिंतन कर सकते हैं न मनन। भारतीय संस्कृति को चार भागों में बांटा गया है— धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। मनुष्य धर्म कर्म के द्वारा मोक्ष प्राप्त करता है। यदि प्राणी बुरा कर्म करे तो नर्क में जा सकता है। प्रकृति सबका भरण पोषण करती है। जिस माता—पिता ने अपने को जन्म दिया है उस बच्चे का भरण पोषण करना उसका कार्य है। मनुष्य यदि अपनी बुद्धि का दुरुपयोग करता है, जीव हत्या करता है तो उसका कर्म निन्दनीय होता है।

सभी व्यक्ति सुखी रहना चाहते हैं, दुःख कोई नहीं चाहता। किन्तु कर्मों के कारण प्राणियों को सुख—दुःख प्राप्त होता रहता है। यदि पूर्वजन्म के कर्म बुरे हैं तो दुःख प्राप्त होता है। इसलिए ऐसा कोई कर्म नहीं करना चाहिए। जिससे दुःख की प्राप्ति हो। कर्म बीज की तरह है। जैसे जिस बीज को बोया जायेगा, वह फल वैसा ही देगा। यदि बबूल का बीज बोया गया है तो निश्चित ही कांटे निकलेंगे और यदि आम का बीज बोया गया है तो आम का फल प्राप्त होगा। इसलिए मनुष्य को अच्छा कर्म ही करना चाहिए। मनुष्य को जीव दया करनी चाहिए। मैत्री, करुणा, सद्भावना, सुचिता और प्रमोद भावना रखनी चाहिए। जगत् के किसी भी प्राणी को दुःख नहीं देना चाहिए। यह भावना रखनी चाहिए कि सभी प्राणी मेरे समान है। इसीलिए भारतीय शास्त्रों में कहा गया है—

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग भवेत्।

अर्थात् सभी सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी कल्याण का दर्शन करें और किसी को भी दुःख न हो। इस उदात्त भावना के द्वारा जीव दया को बढ़ावा दिया गया है। पशु-पक्षी पेड़ पौधे जंगली जानवर सभी कर्मों के अनुसार जीवन यापन करते हैं। आयुष्य कर्म का भोग कर दूसरी योनि में जाते हैं। सुख-दुःख, लाभ-हानि, निन्दा-प्रशंसा, जीवन-मरण इत्यादि घटनाएं कर्मों के अनुसार घटती रहती है। जीवन में अनेक बार कष्ट आता है अनेक बार सुख आता है। कष्ट हमारे द्वारा किये गये बुरे कर्मों का परिणाम है और सुख हमारे द्वारा किये गये अच्छे कर्मों का परिणाम है। मानव को सुख, दुःख कोई दूसरा नहीं देता, बल्कि स्वयं का कर्म ही सुख के लिए उत्तरदायी है। मानव को अहिंसा धर्म का पालन करना चाहिए। जीव दया के लिए अहिंसा का पालन आवश्यक है।

आचारांग में अहिंसा का मूलसूत्र प्राप्त होता है— “सर्वे पाणा सर्वे भूता, सर्वे जीवा, सर्वे सत्ता ण हंतव्वा, ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परितावेयव्वा, ण उद्वेयव्वा।” किसी भी प्राणी, भूत, जीव और सत्त्व का हनन नहीं करना चाहिए, उन पर शासन नहीं करना चाहिए, उन्हें दास नहीं बनाना चाहिए, उन्हें परिताप नहीं देना चाहिए और उनका प्राण वियोजन नहीं करना चाहिए। यह अहिंसा धर्म शुद्ध, नित्य और शाश्वत है। इसका सदाचार पूर्वक पालन करने से पुण्य की प्राप्ति होती है। पुण्य कर्म करके जीव सद्गति को प्राप्त करता है और मोक्ष को प्राप्त करता है। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य में पुण्य कर्म करने का ही उपदेश दिया गया है और पाप को त्याज्य बताया गया है। मानव को सदैव अच्छे कर्म ही करने चाहिए।

भारतीय संस्कृति में ऐसे मूल्यों को महत्व दिया गया है कि समाज में सभी प्राणी सुखपूर्वक रह सकें। भगवान् महावीर का यह सिद्धान्त है कि हर प्राणी का आदर करो— परस्परोपग्रहोजीवानाम्। इसका अर्थ है सभी प्राणी परस्पर मिलकर सहअस्तित्व के साथ रहें। कोई किसी से बैर न करे, कोई किसी से रागद्वेष न करे, यही इस सूत्र का हार्द्र है। यह संसार सबका है किसी एक व्यक्ति या प्राणी का नहीं। इसलिए इसका उपभोग सभी संयम पूर्वक करें कोई किसी के जीवन में हस्तक्षेप न करे।

प्रकृति ने मानव को सभी चीजे उपलब्ध करायी है। सूर्य का प्रकाश सभी लोगों के लिए है। वायु सभी के लिए है। सम्पूर्ण वायुमण्डल सभी के लिए है, आवश्यकता है इनके सदुपयोग

की। यदि मानव त्यागपूर्वक इनका उपयोग करता है तो प्रकृति का खजाना कभी समाप्त होने वाला नहीं है। प्रकृति ने खूब दिया है, इसका त्यागपूर्वक उपयोग होना चाहिए। मानव एक सामाजिक प्राणी है। स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ की चेतना उसमें समाहित है। अहिंसा की वृत्ति भी उसके अंतर्गत है। अहिंसा का तात्पर्य है जीव हिंसा न करना। इसके साथ ही साथ प्राणियों के साथ मैत्री, मुदिता, सहिष्णुता, समता आदि भी अहिंसा के ही पर्याय हैं। सादगी का भी अपना एक दर्शन है, इसे हम आत्मशांति का दर्शन कह सकते हैं। मानव के साथ-साथ प्रत्येक प्राणी शांति सौहार्द्र एवं सद्भावना के साथ जीवन निर्वाह कर सके यही उद्देश्य जियो और जीने दो के सिद्धान्त में है। भगवान् महावीर का जियो और जीने दो अर्थात् जीव दया का सिद्धान्त जितना उस समय प्रासंगिक था, उतना आज भी प्रासंगिक है। यह सिद्धान्त अहिंसा का पोषक है।